1 सदा अपना वरदान याद रखो कि मैं हूँ ही सहजयोगी।
2 नशे से कहो कि हम सहजयोगी नहीं होंगे तो कौन होगा।
3 कोई की ताकत नहीं जो बाप से हमें अलग कर सके - ऐसे चैलेन्ज करने वाले बनो।
4 सदा फखुर में रहो कि हम परमात्म छत्रछाया में रहने वाले हैं।
5 सदा फखुर रहे कि मैं राजयोगी दिलतख्तनशीन हूँ।
6 सर्वशक्तिवान की छत्रछाया में रहो तो हर कार्य सफल हुआ ही पड़ा है।
7 सदा फालो फादर करने के लिए निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी स्थिति में रहो।
8 आदत डालो - मैं सोचा और निराकारी स्वरूप स्मृति में आ जाये।
9 खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन शरीर से न्यारे रहने का पक्का अभ्यास करो।
10 दृढ़ता से तपस्या करके स्व तथा औरों के लिए भी विघ्नविनाशक बनो।
11 ज्वालास्वरूप बन आसुरी स्वभाव-संस्कार को भस्म कर दो।
12 बाप समान कर्मातीत स्थिति द्वारा दुनिया को न्यारे और प्यारेपन का अनुभव कराओ।
13 लाइट हाउस-माइट हाउस बन शान्ति की शक्ति की किरणें फैलाओ।
14 सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि - सदा अपने को सारथी और साक्षी समझकर चलो।
15 बाप के वतन में चले जाओ तो सारी थकावट खत्म हो जायेगी, बापदादा वतन में मालिश कर देंगे।
16 पढ़ाई से प्रीत रख, सर्व खजानों को बांटते महातपस्वी बनो।
17 सदा मन और बुद्धि को समर्थ बनाने का प्रोग्राम सेट करो और श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट रहो।
18 चेहरे से सहजयोगी की, श्रेष्ठ स्थिति की, श्रेष्ठ प्राप्तियों के नशे की चमक दिखाई दे।
19 सारे दिन में भिन्न-भिन्न संबन्धों से बाप को श्वासों-श्वास सिमरो।
20 भगवान और भाग्य के गीत गाते रहो तो निरन्तर योगी बन जायेंगे।
21 मनन शक्ति के अनुभवी बनो तो ज्ञान धन सदा बढ़ता रहेगा।
22 सरलता अर्थात् दिल दिमाग और बोल एकसमान निर्माणचित, निरंहकारी, निस्वार्थी।
23 हर परिस्थिति में मोल्ड होने वाला ही महारथी है।
24 सर्व से सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट लेने वाला ही महारथी है।
25 पांच तत्वों के आकर्षण से परे रहना ही महारथियों के लिए महीन पुरूषार्थ है।

स्मृतियां -

शिव बाबा याद है ? वर्सा याद है ? अपना घर शान्तिधाम याद है ? नई राजधानी स्वर्ग याद है ?
पुरानी दुनिया का परिवर्तन याद है ? सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण कुल याद है ? कल्याणकारी संगमयुग याद है ?
मैं कौन हूँ, किसका हूँ, मेरे सर्व संबध किससे हैं, सर्व प्राप्तियां किससे हैं, सब याद है ?
84 जन्म पूरे हुए, अब वापिस अपने प्यारे स्वीटहोम शान्तिधाम जाना है सब याद है ?
आज के ईश्वरीय महावाक्यों के स्मृति स्वरूप हो ? भगवान द्वारा मिले हुए अपने सब टाइटिल याद हैं ?
सिर्फ बाबा की याद से ही विकर्म भस्म होंगे, याद है ? मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ, याद है ?
याद से सच्चा सुख, शान्ति का अनुभव होता है, खुशी का पारा चढ़ता है, याद है ?
वाह रे मैं, वाह मेरा भाग्य, वाह मेरा मीठा बाबा, वाह मीठा कल्यायणकारी ड्रामा, सब याद है ?